ORIGINAL RESEARCH PAPER

Sociology

भारतीय संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव

KEY WORDS:

लखन सिंह दांगी

सहायक प्राध्यापक(समाजशास्त्र विभाग), शासकीय महाविद्यालय ढोढर,श्योपुर(म-प्र),जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म-प्र)

किसी भी देश की संस्कृति उस देश में निवास करने वाली सामान्य जनता के रहन सहन आचार विचार खानपान वस्त्र आभूषण गीत संगीत जन्म व मृत्यु आदि संस्कारों से निर्मित होती है| इसलिए अगर किसी देश के मूल्य और संस्कृति के वास्तविक और प्राकृतिक स्वरूप को परखना हो तो इसका सबसे अच्छा स्त्रोत उस देश की संस्कृति और मुख्य रूप से लोक संस्कृति होती है |किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समस्त स्वरूप कोसंस्कृति कहा जाता है| जिसका अर्थ है उत्तम या सुधरी हुई स्थिति |मनुष्य एक प्रगतिशील और सामाजिक प्राणी है| वह अपने चारों की सामाजिक एवं प्राकृतिक स्थितियों को निरंतर सुधारने में लगा रहता है| ऐसी प्रत्येक जीवन पद्धति रीति रिवाज रहन-सहन आचार -विचार खान-पान वस्त्र -आभूषण अनुसंधान और आविष्कार जो मनुष्य को पशुता से ऊपर उठा सकें संस्कृति है| भौतिक उन्नति से शरीर की भूख मिट सकती है किंतु इसके बावजूद मन और आत्मा तो अतृप्त ही बनी रहती है इन्हें संतुष्ट करने के लिए मनुष्य अपना जो विकास और उन्नति करता है, उसे संस्कृति कहते हैं| मनुष्य की जिज्ञासा का परिणाम साहित्य, कला, धर्म और दर्शन इत्यादि होते हैं| सौंदर्य की खोज करते हुए वह संगीत, साहित्य, मूर्ति चित्र और वास्तु आदि हमें कलाओं को उन्नत करता है| सुखपूर्वक निवास करने के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक संगठनों का निर्माण करता है |इस प्रकार मानसिक क्षेत्र में भी उन्नति की सूचक उसकी प्रत्येक सम्यक कृति संस्कृति का अंग बनती है |इनमें प्रधान रूप से धर्म, दर्शन ,सभी ज्ञान विज्ञानो और कलाओं सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं और आर्थिक संस्थाओं और प्रथाओं का समावेश होता है |भारतीय संस्कृति समस्त विश्व में अपना अलग स्थान रखती है| नैतिक दृष्टि से संस्कृति का संबंध नैतिकता सच्चाई ईमानदारी आदरणीय एवं सद्गुणों से हैं संस्कृति का संबंध सत्यम शिवम सुंदरम से है|एडवर्ड बर्नेट टाइलर के अनुसार "संस्कृति वह समग्र जटिलता है जिसमें ज्ञान विश्वास कला आचार कानून तथा और ऐसी ही अन्य संस्थाओं एवं आदतों का समावेश है जो मनुष्य समाज का एक सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है|"[1] मैलिनोवस्की के अनुसार, "संस्कृति जीवन व्यतीत करने की एक संपूर्ण विधि है जोकि व्यक्ति की शारीरिक मानसिक एवं अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करती है और उसे प्रकृति के बंधनों से मुक्त करती है|"[2] आर. एम .मैकाइवर के अनुसार, "संस्कृति हमारे जीवन प्रमुख चिंतन पद्धतियों दैनिक संपर्कों कला साहित्य धर्म मनोरंजन विनोद आदि में हमारी प्रकृति की ही अभिव्यक्ति है|"[3]

वैश्वीकरण एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें दुनिया के सभी देश एक दूसरे से आर्थिक राजनीतिक तथा सांस्कृतिक रूप से जुड़े हुए हैं| इस प्रक्रिया में सभी संभव स्तरों पर वैश्विक संचार बढ़ता है तथा विश्व में एकरूपता और क्षेत्रीयता दोनों की प्रवृत्ति बढ़ती है| इस प्रक्रिया में कुछ सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों में पड़ते हैं| वैश्वीकरण के परिणाम स्वरुप भारतीय समाज ने पश्चिमी समाज तथा संस्कृतियों की कुछ बातों को आत्मसात किया है, जैसे- महिलाओं की स्वतंत्रता हेतु पहल, रूढ़िवादी तत्वों का विरोध, एकांकी परिवारों का उदय, वृद्धाश्रम में माता-पिता को रखना, लिव-इन-रिलेशनशिप की अवधारणा का पनपना इत्यादि| शिक्षा की अधिक से अधिक लोगों तक पहुंच सुनिश्चित हुई है |नगरीकरण, जन जागरूकता, संसाधनों की पहुंच में वृद्धि हुई है| हमारे खान-पान रहन-सहन तथा पहनावे में विविधता आई है| वैश्वीकरण ने हमारे सामने विकल्पों की उपलब्धता को बढ़ावा दिया है | भारतीय संस्कृति में आधुनिकतम तकनीकों का आगमन हुआ है जैसे- लैपटॉप ,एयर कंडीशनर ,एंड्राइड मोबाइल, वाशिंग मशीन, फ्रिज आदि आज आम बात हो गई है| वैश्वीकरण के फलस्वरूप भारतीय संस्कृति में मध्यम वर्ग का उदय हुआ है इसके अलावा डिजिटल लेनदेन ,सोशल मीडिया ,ई-कॉमर्स आदि कई क्षेत्रों में प्रगति हुई है हालांकि वैश्वीकरण का भारतीय संस्कृति में पड़ने वाले प्रभाव की भी सीमाएं हैं जैसे - आज शिक्षा बाजार के केंद्रित हो गई हैं और आज पढ़ाई का उद्देश्य मात्र पैसे कमाने तक सीमित रह गया है लोक कल्याणकारी राज्य की जगह बाजार, आर्थिक तथा सामाजिक प्राथमिकताओं के प्रमुख निर्धारक गए हैं | वैश्वीकरण मैं सांस्कृतिक समरूपता की दिशा में कार्य किया है जिसकी वजह से स्थानीय संस्कृतियों को खतरा पहुंचा है |

वैश्वीकरण के दौर में भारतीय संस्कृति का विघटन हो रहा है| जहां भारत के गांव नगर में बदलते गए और नगर महानगरों में बदलते गए | नगर में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करने लगा| परिणाम स्वरूप उनके खान-पान, रहन-सहन वेश-भूषा, केष-भूषा, भाषा, व्यवसाय, मनोरंजन के साधन आदि में परिवर्तन के संकेत मिलने लगे| वास्तुकला, नृत्यकला, हस्तकला,शिल्पकला एवं संगीतकला आदि के लिए भारत को विश्व में जाना जाता था| ताजमहल की

ओर आज भी विश्व धरोहर की दृष्टि से देखा जाता है| भारत में गढ़ क़िलों के अद्वितीय नमूने भारत के सांस्कृतिक धरोहर माने जाते हैं| राजमहल में रहने वाले भारतीय दस गुना दस के कमरे में रहने को मजबूर हो गए हैं, यह वैश्वीकरण का ही परिणाम है।

भारतीय संस्कृति में नारी को देवी के रूप में पूजा जाता रहा है। मनुस्मृति में कहा गया है,

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ।।"४

अर्थात जहां स्त्रियों की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं और जहां स्त्रियों की पूजा नहीं होती है, उनका सम्मान नहीं होता है,वहां किए गए समस्त अच्छे कर्म निष्फल हो जाते हैं। यह भारतीय संस्कृति की देन है| भारतीय समाज में नारी को प्रत्येक पुरूष, माँ-बहन से भी बढ़कर सम्मान दिया करता था| वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप कम से कम कपड़े पहनना आज की नारी का फैशन सा बन गया है| इतने कम कपड़ों में न देवी के दर्शन होते हैं और ना ही भारतीय नारी के| नारी का देह प्रदर्शन संस्कृति नहीं, विकृति बनता जा रहा है| इस वजह से आए दिन बलात्कार जैसी घटनाएं घटित होने लगी है| भारतीय नारी की गरिमा दिन प्रतिदिन कम होने लगी है | वैश्वीकरण और बाजारवाद के दौर में नैतिक मूल्यों का विघटन भारतीय संस्कृति की चिंता बढ़ा रहा है|

भारत विविधताओं वाला देश कहलाता है, यहां संस्कृति का परिचय कराने वाली अनेक समृद्ध भाषाएं थी| संस्कृति का संक्रमण एवं संवर्धन करने वाली भाषाओं में संस्कृत, पालि, प्राकृत ,अपभ्रंश और वर्तमान समय में हिंदी का स्थान महत्वपूर्ण है | इन भाषाओं से भारतीयता की पहचान होती थी |जबकि अब हम अंग्रेजी के पीछे पड़े हुए हैं |अंग्रेजी पढ़ लिख लेना बड़े गर्व की बात समझी जाती हैं| हिंदी भाषा से शिक्षा और संस्कृति की जो परिपूर्ति होती है वह अंग्रेजी से नहीं होती है आज हम ना हिंदी बोलते हैं और ना इंग्लिश बल्कि हम हिंगलिश बोलने लगे हैं| प्रत्येक मां बाप अपने बच्चों को हिंदी या प्रादेशिक भाषाओं में नहीं बल्कि अंग्रेजी में पढ़ाना चाहते हैं |इससे यह पता चलता है कि भारतीय भाषाओं का भविष्य क्या होगा अपने ही घर में हिंदी का इतना अनादर हम करने लगे हैं |जिस भाषा के माध्यम से हमने आजादी हासिल की देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने में जिस भाषा ने महत्वपूर्ण योगदान दिया वह भाषा अपनों से लाचार बनी हुई है जिससे सांस्कृतिक सुरक्षा खतरे में पड़ गई है |यह सब वैश्वीकरण की देन है।

भारत का पाककला में भी महत्वपूर्ण स्थान था |भारतीय नारी को विविध प्रकार की पाक कलाओं का ज्ञान था| भारत के अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग प्रकार के खाद्य व्यंजन बनते थे जिनका अलग ही स्वाद और स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभदायक थे |वह कम से कम समय में पौष्टिक तत्व से युक्त भारतीय भोजन बनाने में सक्षम थे| किंतु वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप हम क्या खाएं, क्या पिए ,यह हमें बाजार सिखाता है बाजार का मायावी जाल, विज्ञापन सभी को अपनी ओर आकर्षित करने लगा है परिणाम स्वरूप बच्चे ,बूढ़े युवक-युवती घर के भोजन के बजाय पिज्जा बर्गर जंक फूड फास्ट फूड इत्यादि के आदि होने लगे हैं |उन्हें घर के भोजन में कोई रुचि नहीं है इससे यह भय होने लगा है कि वर्तमान पीढ़ी भारतीय भोजन को जल्दी ही भूल जाएगी| स्वादिष्ट और पौष्टिक तत्वों से भरपूर सरस भोजन को बढ़ावा देने वाली भारतीय संस्कृति अब खत्म होने को है| यह वैश्वीकरण तथा बाजारवाद की ही देन है|

संयुक्त परिवार भारतीय संस्कृति की बुनियादी आधारशिला है |भारत में परिवार का अर्थ ही संयुक्त परिवार से था |इरावती कर्वे के अनुसार "एक संयुक्त परिवार उन व्यक्तियों का समूह है जो एक ही छत के नीचे रहते हैं जो एक ही रसोई में पका भोजन करते हैं जो सामान्य संपत्ति के अधिकारी होते हैं जो सामान्य पूजा में भाग लेते हैं तथा जो परस्पर एक दूसरे से विशिष्ट नातेदारी से संबंधित है।"[5] भारत में परिवार में आपसी प्रेम, सद्भावना, सहयोग ,सेवा, समर्पण, अनुशासन त्याग इत्यादि भावों से भारतीय संस्कृति को सींचा जाता था| अतिथि देवो भव: की अवधारणा से सभी परिचित थे| घर की दीवारों पर आइए आपका स्वागत है लिखा हुआ होता था| लेकिन आज इसके बजाय घर की दीवारों पर कुत्तों से सावधान के बोर्ड लगे हुए हैं| बड़े बुजुर्गों के साथ किए जाने वाले अभिवादन के तौर तरीके भी बदल गए हैं पहले बुजुर्गों से चरण स्पर्श करके प्रणाम सुप्रभात, नमस्कार आदि अभिवादन रूपों का प्रयोग किया जाता था| किंतु उनकी जगह आज हेलो हाय, सेम टू यू आदि रूपों ने ले ली है| परिवार में सामुदायिक एकता, आत्मीयता, समरसता, भाई-चारा आदि भाव विद्यमान है| आज हम दो हमारे दो के बीच भी अनबन का भाव देखने को मिलता है| घर के बुजुर्गों को वृद्ध आश्रम में रखना हैय नहीं माना जाता| यह भारतीय संस्कृति का विघटन नहीं तो और क्या है |यह सब वैश्वीकरण का ही परिणाम है| वैश्वीकरण की देन है|

प्रकृति पूजा भारतीय संस्कृति का मूलाधार है ।यहां पेड़-पौधे, नदियाँ, पर्वत, पशु-पक्षी इत्यादि सभी पूजनीय हैं। प्रकृति की रक्षा में स्वयं की रक्षा का एहसास भारतीय लोगों को था। प्रकृति से अपनी सारी जरूरतें पूरी करने वाला मानव आज प्रकृति का ही दोहन करने लगा है। उसका सर्वनाश करने पर तुला हुआ है। परिणामस्वरूप प्रकृति अपना भयानक रूप दिखाने लगी है। पशुओं के प्रति दया भाव भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग था। किंतु वर्तमान में परिवेश में पशु पक्षियों की बलि चढ़ाना उसकी हत्या कर अपनी जीविका चलाना यह विकृति हो सकती है संस्कृति नहीं ।पशु पक्षियों की हत्या से उपजी वैश्विक महामारी मनुष्य का सर्वनाश करने का संकेत दे रही है ।वह दिन दूर नहीं

जब पशु पक्षियों की तरह मनुष्य भी प्रकृति से अपनी जान की भीख मांगेगा ।गंगा की पवित्रता एवं शुद्धता को बनाए रखने का जिम्मा भारतीय समाज पर था ।वहां आज गंगा को गंदगी से भरा जा रहा है ।हमारे यहां पेड़ पौधे लगाने की संस्कृति थी, पेड़ काटकर जंगल साफ करने की नहीं।मूक पशु पक्षियों का आसरा छिनने का अधिकार भारतीय संस्कृति में नहीं है ।हिंसा और क्रूरता यह वैश्वीकरण की ही देन है।

गुरु शिष्य की समृद्ध परंपरा भारतीय संस्कृति की परिचायक है।भारतवर्ष में गुरु को ईश्वर से बढ़कर माना गया है। उनके आशीर्वाद एवं प्राप्त ज्ञान से शिष्य अपने जीवन को सुंदर से सुंदर तम बनाने में सफल होता है। संत कबीर दास जी ने गुरु की महिमा का वर्णन बहुत ही सुंदर शब्दों में किया है।

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरू आपकी गोविन्द दियो बताय।।

भारतवर्ष में नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय ज्ञान-विज्ञान के लिए प्रसिद्ध थे। यहां संसार के विभिन्न देशों से लोग ज्ञान पाने के लिए आया करते थे। किंतु आज भारतीय युवक-युवती विदेशों में शिक्षा पाना अपना सौभाग्य समझते हैं, उन्हें इस देश की शिक्षा व्यवस्था पर भरोसा नहीं है। वर्तमान समय में गुरु-शिष्य के मायने ही बदल गए हैं। अध्ययन -अध्यापन जो निस्वार्थ रूप से होता था उसमें स्वार्थ भर गया है। गुरु ज्ञान आज महज एक व्यवसाय बन गया है। गुरु बाजार और शिष्य ग्राहक बन गया है। गुरु के प्रति उसके मन में कोई सम्मान का भाव देखने को नहीं मिलता। जब तक सफलता नहीं मिल जाती वह गुरु के गुण गान करते रहता है। जैसे ही सफलता मिल जाती वह गुरु को जल्दी ही भूल जाता है। गुरु- शिष्य का स्वार्थ पूर्ण व्यवहार भारतीय संस्कृति के विपरीत हैं। यह बाजारवाद और वैश्वीकरण के परिणाम मात्र है।

राष्ट्रप्रेम,राष्ट्रीय एकता और अखंडता भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। भारतीय समाज मैं साहित्य, कला, नृत्य, संगीत, गीत इत्यादि के माध्यम से राष्ट्र के स्वर्णिम अतीत का गुणगान करता आया है। राष्ट्र पर आने वाली हर विपदा को वह अपनी विपदा समझता है और उसे सुलझाने के अथक प्रयास भी करता है। इसमें उसकी राष्ट्रीय भावना और राष्ट्र प्रेम का बोध होता है।प्रसिद्ध समाजशास्त्री श्री योगेंद्र सिंह का कहना है कि "इतिहास से सीख लेते हुए हमें आधुनिकीकरण और राष्ट्रीयता को विकास के साथ जोड़ना चाहिए और समाज में 'विभिन्नता में एकता' को एक वृहत्त सहमति पर आधारित करना चाहिए।"६किंतु वर्तमान परिवेश में भारत में कुछ कपूत संताने 'हिंदुस्तान मुर्दाबाद'और 'पाकिस्तान जिंदाबाद' के नारे लगा रही है ।"भारत माता" की जय बोलने में उन्हें शर्म आती है। राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगीत, राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति जिन्हें चीड़ हो, वह राष्ट्र का पुत्र कैसे हो सकता है?और वह सांस्कृतिक धरोहर का रक्षक कैसे बन सकता है ?सही अर्थ में भारतीय संस्कृति का विघटन यहीं से शुरू हो जाता है और लगातार हो रहा है।

तीज-त्योहारों को भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर माना जाता है। जिसमैं सांस्कृतिक गतिविधियां देखने को मिलती हैं। किसी देश का सांस्कृतिक मूल्यांकन करना हो तो उस देश के त्योहारों का अध्ययन करना चाहिए। दीपावली, दशहरा,रक्षाबंधन, होली इत्यादि त्यौहार सांस्कृतिक संवर्धन में चार चांद लगा देते हैं। इन त्योहारों में लोककला, लोकसंस्कृति सांस लेती है। नृत्य, गीत की धुन पर समस्त समाज थिरकने लगता है। भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी,बिहू, ओणम मणिपुरी जैसे लोकनृत्य के कारण भारतीय संस्कृति की गरिमा बढ़ जाती है। आज उनकी जगह पॉप संगीत ने ले लिया है जो उबाऊ लगने लगा है। उसमें समाज के लोगों को आकर्षित करने का गुण नहीं है।त्यौहारों के अवसर पर बहू- बेटियों का अपने मायके में आना-जाना परिवार में खुशियां भर देता था।आज त्यौहार कब आते हैं और कब चले जाते हैं पता ही नहीं चलता है। एक जमाना था जब लोग त्यौहारों को बड़ी धूम-धाम से मनाया करते थे। वक्त निकालकर लोग आपस में मिल लिया करते थे। दिल की बात खुलकर बता दिया करते थे पर आज सब समाप्त हो गया है। संस्कृति नाम मात्र की शेष रह गई है इसमें किसी की दिलचस्पी दिखाई नहीं देती है।शहर में बसे हुये लोग त्योहारों पर भी अपने गांव नहीं आते। बहन राखी लिए भाई का इंतजार कर रही है किन्तु भाई के पास वक्त नहीं है। इस तरह हम प्रथा और परंपराओं को तोड़ने लगे हैं और ऐसे में उम्मीद भी करते हैं कि संस्कृति बची रहे ऐसे में यह संभव नहीं हैं।

समाज में व्याप्त संस्कार भारतीय संस्कृति का परिचय देते हैं इसमें जन्म से लेकर मृत्यु तक के सभी संस्कार स्कृतिक धरोहर माने गए हैं। भारतीय संस्कृति में गर्भाधान संस्कार जन्म संस्कार विवाह संस्कार मृत्यु संस्कार इत्यादि को महत्वपूर्ण माना गया है। उनकी अपनी कुछ विधियां हैं और विधियों के अनुसार ही संस्कार किए जाते हैं पर वर्तमान संदर्भ में इन संस्कारों में बदलाव के संकेत मिलते हैं। अतीत में विवाह सामूहिक पर्व एवं त्योहार के रूप में मनाया जाता था। आज स्थिति यह हो गई कि वधू और वर के परिवार के सदस्य ही विधियों को संपन्न कर रहे हैं। न्यायालय में विवाह हो रहे हैं। इस तरह सामूहिक सहयोग की संस्कृति समाप्त हो रहीं है। इसी तरह मृत्यु संस्कार भी अब एक औपचारिकता का भाग बन गया है। जन्म और मृत्यु जैसी घटना भी आज के मनुष्य के लिए कोई मायने नहीं रखती हैं। विदेशों में बसे हुए व्यक्ति अपने माता पिता के अंतिम संस्कार में भी पहुंच नहीं पाते। इस बात का उन्हें अफसोस भी नहीं होता है क्योंकि भारतीय संस्कृति से कटा हुआ हर व्यक्ति सामाजिक संवेदना से कट जाता है। वैश्विक परिवेश में इन बातों का कोई मूल्य शेष नहीं रह जाता। उनके लिए आश्चर्य की बात नहीं है। जो अभी

संस्कृति से जुड़े हुए हैं, जिनके ह्रदय में संवेदना शेष वहीं संस्कृति को भली-भांति जान सकते हैं।

भारत को साधु-संतों का देश कहा जाता है। इस देश में नामदेव, कबीर, रैदास, मीरा, तुकाराम, रामानंद, तुलसीदास, सूरदास आदि संतों ने भारतीय संस्कृति की गरिमा बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन संतो ने अपने साहित्य के माध्यम से प्रेम, त्याग, सेवा, समर्पण, दया, सद्भावना, परोपकार, भाईचारा आदि अनेक गुणों से भारतीय संस्कृति को सींचा है। मानवतावादी दृष्टिकोण भारतीय संस्कृति की बुनियाद है। वर्तमान परिवेश में स्वयं घोषित संतों एवं बाबाओं के आचरण से भारतीय संस्कृति की बड़ी क्षति हुई है, इसे आप सभी जानते हैं। इन स्व घोषित संतों ने संत की परिभाषा ही बदल कर रख दी है।' राम नाम जपना पराया माल अपना' की उक्ति इन संतों पर चरितार्थ होने लगी है। संतों की भूमि में संतों को पीट-पीटकर हत्या हो रही है। मॉबलीचिंग की घटनाओं से पूरा भारत दहल उठा है।यह भारतीय संस्कृति नहीं है यह सब वैश्वीकरण की देन है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि, वैश्वीकरण के दौर में भारतीय संस्कृति का निरंतर विघटन हो रहा है। जहां एक ओर प्रगति और विकास के नाम पर पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण हो रहा है। वहीं दूसरी ओर भारतीय संस्कृति को पिछड़ेपन का प्रतीक माना जा रहा है ।ऐसी स्थिति में भारतीय संस्कृति में व्याप्त मानवीय मूल्यों की रक्षा का संकट खड़ा हो गया है। बाजारवाद और वैश्विक संगठन के इस दौर में कई संस्कृतियों का टकराव आपस में जारी है। इसमें वहीं संस्कृति टिक पायेगी जिसमें मानव मूल्यों और मानवीय संवेदना होंगी। भारतीय संस्कृति को क्षति पहुंचाने के लिए कोई बाहर से नहीं आता, हम लोग उसका अनादर करते है।हम चाहे तो भारतीय संस्कृति फिर से पुनर्जीवित हो सकती है। उसका संवर्धन और रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

१. एम.एल.गुप्ता और डी.डी.शर्मा , समाजशास्त्र पेज ३३४
२. मेकाइवर और पेज सोसाइटी, पेज ४९९
३. विद्याभूषण और सचदेवा ,समाजशास्त्र, पेज ७३५
४. मनुस्मृति, पेज ३/५६
५. रविंद्र नाथ मुखर्जी ,भारतीय समाज और संस्कृति ,पेज १६९
६. अमर कुमार ,योगेंद्र सिंह का समाजशास्त्र, पेज ८९